16-07-2022

केन्या की चीनी मिलों की हालत सुधारेगा एनएसआई

- जल्द ही दोनों शीर्ष संस्थानों के बीच एक एमओयू साइन किया जाएगा
- केन्या की ग्रेट लेक्स विश्वविद्यालय शुगर रिसर्च इंस्टीट्यूट ने एनएसआई से बात की

डीटीएन

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर, केन्या को चीनी मिलों में कार्य करने हेतु प्रशिक्षित मानवशक्ति तैयार करने में सहायता करेगा। केन्या की ग्रेट लेक्स विश्वविद्यालय, शुगर रिसर्च इन्स्टीट्यूट और राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के अधिकारियों के मध्य इस सन्दर्भ में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वार्ता की गयी ।

ग्रेट लेक्स विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर हेज़ुल मोम्बा ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान को केन्या में स्थित चीनी मिलों में कार्यरत एवं नवीन स्नातक अभियन्ताओं (फ्रेश ग्रैजुएट इंजीनियर) के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने हेतु सहयोग मांगा। उन्होंने कहा कि केन्या में लगभग पूरे वर्ष चीनी मिलें चलती हैं किंतु यहाँ पर शुगर टेक्नोलॉजी और शुगर इन्जीनियरिंग में दक्ष मानवशक्ति की भारी कमी है जिसके कारण चीनी मिलों की दक्षता तुलनात्मक रूप से कम है। साथ ही केन्या की चीनी मिलों को आधुनिकीकरण एवं विस्तार हेतु विदेशी तकनीकविदों पर निर्भर रहना पड़ता । अतः प्रारम्भ में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में सहायता करे एवं तदुपरान्त ग्रेट लेक्स विश्वविद्यालय को इस प्रकार के नियमित पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए एक संस्थान स्थापित करने में सहायता करे।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने सुझाव दिया कि चूंकि केन्या मे एक नए संस्थान की स्थापना मे समय लगेगा अतः तब तक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान हाइब्रिड मोड में लघु अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर सकता है जिसमें ऑनलाइन शिक्षण के उपरान्त संस्थान की फैकल्टी, केन्या जाकर वहाँ पर उनको किसी चीनी मिल में व्यवहारिक प्रशिक्षण दे सकती है। इस विषय पर केन्या की शुगर कंपनी के अधिकारयों ने अपनी इकाइयों को इस कार्य हेतु उपयोग में लेने की सहमति दी। उन्होने सुझाव दिया कि इस समस्त कार्य हेतु दोनों संस्थानों द्वारा एक समझौता किया जा सकता है।

वार्तानुसार, समझौता ज्ञापन (एम ओ यू) का प्रारूप राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा ग्रेट लेक्स विश्वविद्यालय, को भेजा जा रहा है जिस पर सहमति के उपरान्त आगे की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। संस्थान की एक ग्लोबल इंस्टिट्यूट बनाने की तरफ हमारा ये एक और कदम होगा।